सच में “चट्टान पर आधारित” होने का क्या मतलब है?

क्या आप वास्तव में चट्टान पर बने हैं?

अगर आप अधिकांश ईसाइयों से पूछें कि बाइबल में “चट्टान” किसके लिए है, तो अधिकतर लोग तुरंत कहेंगे, “यीशु।” और यह बिल्कुल सही है। शास्त्र भी इसे स्पष्ट रूप से कहता है:

“वह पत्थर जिसे भवन बनाने वालों ने खारिज किया, वही कोने का मुख्य पत्थर बना।”
— मत्ती 21:42

“…वे उस आध्यात्मिक चट्टान से पीते रहे जो उनके साथ थी, और
वह चट्टान मसीह था।”
— 1 कुरिन्थियों 10:4

स्पष्ट है, यीशु ही वह चट्टान हैं—हमारे उद्धार और आशा की अडिग नींव। यह मसीहशास्त्र (Christology) का एक मूल सिद्धांत है: यीशु अस्वीकार किया गया पत्थर भी हैं और परमेश्वर के नए वाचा-लोगों की नींव भी।

लेकिन यीशु स्वयं हमें बताते हैं कि वास्तव में उन पर आधारित होना क्या है—और यह केवल यह जानने का मामला नहीं कि वह कौन हैं।

आइए उनके शब्द मत्ती 7:24–27 में देखें:

“इसलिए जो कोई भी मेरे इन वचनों को सुनता है और उन्हें मानता
है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपने घर को

पर बनाया।
बारिश आई, नदियाँ बहीं, हवाएँ आईं और उस घर पर टकराईं; फिर भी
वह नहीं गिरी, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी।
पर जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उन्हें मानता नहीं, वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपने घर को रेत पर बनाया।
बारिश आई, नदियाँ बहीं, हवाएँ आईं और उस घर पर टकराईं, और वह बड़ी तबाही के साथ गिर गया।”
— मत्ती 7:24–27

यह पर्वत प्रवचन (मत्ती 5–7) का निष्कर्ष है, जिसमें परमेश्वर

के राज्य की जीवन शैली और सिद्धांत बताए गए हैं। यीशु इस प्रवचन को केवल सुनने के लिए नहीं, बल्कि उसे जीने के लिए कहते हैं।

मुख्य बात: नींव (चट्टान) केवल यीशु की पहचान नहीं है—यह उनके वचन के पालन में है।

यह पवित्रता की बाइबिल शिक्षा से जुड़ा है: यह विश्वासियों के जीवन का सतत रूपांतरण है, जो पवित्र आत्मा की शक्ति और मसीह के प्रति आज्ञाकारिता से होता है। जेम्स पत्र में इसे इस तरह कहा गया है:

“शब्द को केवल सुनकर अपने आप को मत धोखा दो; जो कहता है वही करो।”
— याकूब 1:22

चट्टान क्या नहीं है

केवल यीशु का नाम जानना नहीं है।
बाइबल पढ़ना या याद करना नहीं है।
गहन धर्मशास्त्र, ग्रीक या हिब्रू शब्दों को समझाना नहीं है। उत्कृष्ट शिक्षक या उपदेशक होना भी नहीं है।

ये सब बिना आज्ञाकारिता के भी हो सकते हैं।

चट्टान क्या है

यीशु के वचन सुनना
और उनका पालन करना

यही वह चीज़ है जो जीवन को आध्यात्मिक तूफानों—प्रलोभन, पीड़ा, उत्पीड़न या परीक्षाओं—सहन करने योग्य बनाती है।

“जो सुनता है…और करता है…”
यह सच्चे शिष्य का बाइबिल चित्र है (लूका 6:46—“हे प्रभु, प्रभु! कहकर तुम क्यों नहीं करते जो मैं कहता हूँ?”)।

आज की स्थिति

आज की चर्च में, कई विश्वासियों की नींव केवल शिक्षाओं पर है, आज्ञाकारिता पर नहीं।
हम अच्छे उपदेशों की सराहना करते हैं, बाइबल अध्ययन से आशीष महसूस करते हैं, और कहते हैं, “यह संदेश बहुत प्रभावशाली था”—लेकिन अगर हम उसे नहीं जीते, तो इसका हमारे जीवन में कोई वास्तविक असर नहीं होता।

आवेदन के बिना धर्मशास्त्र खाली ज्ञान बन जाता है (1

कुरिन्थियों 8:1—“ज्ञान घमंड बढ़ाता है, पर प्रेम उठाता है”)।

सरल सत्य

यदि आप यीशु के एक भी शब्द को जीते हैं, तो आप उस व्यक्ति से आध्यात्मिक रूप से मजबूत हैं जो पूरी बाइबल जानता है लेकिन कभी पालन नहीं करता।

धर्म के प्रेम में रहें।
पवित्रता की खोज करें।
हृदय की पवित्रता का अभ्यास करें।
आध्यात्मिक वृद्धि के लिए प्रतिबद्ध रहें।
भलाई करें।

यही तरीका है कि आप चट्टान पर आधारित बनते हैं।

प्रभु आपको आशीष दें, आज्ञाकारिता में चलने की शक्ति दें, और हर तूफान में मजबूत बनाए रखें।

शालोम।

Share on:
WhatsApp